ISSN: 3107-3557(Online)
The Knowledge Spectrum - An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व

Dr. J. R. Jadav
Associate Professor

वर्तमान युग में प्रगति के पथ पर अनुवाद का महत्व पूर्ण योगदान रहा है। दिन प्रतिदिन अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसलिए यह कहना उचित ही होगा कि अनुवाद एक सेतु का भी कार्य करता है। जिस तरह कंप्यूटर से हमें नई-नई टेक्नोलॉजी और नया ज्ञान प्राप्त होता है, उसी तरह अनुवाद के माध्यम से हमें विभिन्न राज्यों और देश की शिक्षा ,संस्कृत ,साहित्य ,समाज के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। अनुवाद एक समाज से दूसरे समाज, एक भाषा से दूसरी भाषा के बीच सेतु का कार्य करते हैं, क्योंकि हर भाषा का, हर समाज का एक विशिष्ट परिवेश होता है तथा उनकी विशेषताएं होती है जिसे अनुवाद द्वारा सभी के लिए आसान बनाया जाता है।

वर्तमान समय में हमारे लिए अनुवाद विधा पर हिंदी के मौलिक पुस्तक के अभाव को दूर करने की दिशा में भारतीय अनुवाद परिषद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनुवाद से विचारों का आदान-प्रदान होता है और भाषाओं और संस्कृतियों की समृद्धि को बढ़ावा मिलता है। अनुवाद से विभिन्न देशों के साहित्य, विचार, अनुसंधान, राजनीति और सामाजिक सांस्कृतिक, विचारधाराओं से परिचित होता है।

अनुवाद कार्य बहुत सरल कार्य नहीं है। अनुवाद करते समय हमें विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय तो विशेष कठिनाइयां नहीं आती है किंतु साहित्य के अनुवाद में अनुवाद को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साहित्य के अनुवाद में सबसे कठिन कविता का अनुवाद होता है। साहित्य के अनुवाद में सबसे अधिक समस्याएं अनुवादक को मुहावरों एवं लोकोक्तियां के अनुवाद में आती है। कुछ विद्वानों का मानना है की कविता का अनुवाद संभव नहीं है, किंतु आज यह बात गलत सिद्ध हो चुकी है। यदि कविता का अनुवाद करते समय स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा में सांस्कृतिक तथा देश -काल का बहुत अधिक अंतर न हो तो इसका अनुवाद करते समय अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता है। अनुवाद के बिना आज विश्व संपर्क ही कट जाने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

यदि हम पीछे मुड़कर देखें तो प्राचीन समय की बात करें तो हम अनुवाद पाएंगे कि उस समय भी अनुवाद होते रहें है लेकिन आज की तरह से नहीं क्योंकि तब हम अपने देश की सीमाओं को लांध हीं पाए थे। हमारे आदान-प्रदान देश के बीच न होकर, केवल राज्यों और शहरों आदि तक सीमित रहते थे लेकिन आज विश्व एक इकाई हो गया है। आज हम विश्व की सीमाएं बांध सकते हैं और उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में अनुवाद ही एक ऐसा जरिया है जिसके द्वारा हम विश्व की प्रतिस्पर्धा में भाग ले सकते हैं क्योंकि देश को विकसित करने के लिए हमें न केवल देश के अंदर रहकर, बल्कि देश के बाहर भी कार्य करने पड़ते हैं। इसके लिए सबसे पहले हमें जिस देश के साथ संबंध बनाना है, उसके विचार, संस्कृति, भाषा, राजनीतिक हलचल, उसकी अर्थव्यवस्था सभी के बारे में जानना होगा और यह तभी संभव है जब हमें उनकी भाषा समझ में आएगी। लेकिन उस देश की भाषा कोई एक व्यक्ति या दो चार लोग सिख भी सकते हैं परंतु सभी लोग उसे भाषा को सिख पाने का सामर्थ्य रखें ऐसा जरूरी नहीं है। इसलिए अनुवाद द्वारा वहा की

संस्कृति के बारे में लोगों को जानकारी मिल सकती है। यह बात केवल दूसरे देशों के लिए भी लागू नहीं होती बल्कि अपने देश के अंदर भी लागू होती है। क्योंकि यह भी जरूरी नहीं है कि एक प्रांत के लोग दूसरे प्रांत की भाषा और संस्कृति से अवगत हो। इसकी जानकारी हम उनकी पुस्तक पढ़कर या फिर अनुवाद की हुई पुस्तकों से भी पा सकते हैं।

संविधान लागू होने के समय सरकारी कामकाज का तकरीबन समस्त साहित्य अंग्रेजी में था, अतः साहित्य को हिंदी में सुलभ कराकर ही संवैधानिक जिम्मेदारीयो का पालन हो सकता था। इसलिए 27 अप्रैल, 1960 को भारत के राष्ट्रपति ने एक आदेश जारी किया जिसमें कहा गया कि सरकारी कार्यालय हो आदि में जिन अधिनियमों, पुराने रजिस्टरों तथा अन्य प्रक्रिया साहित्य का प्रयोग किया जाता है, उनका हिंदी में अनुवाद कराया जाए। आज हिंदी में अनुवाद का कार्य बहुत बड़ी मात्रा में हो रहा है। यथा: संकल्प, सामान्य आदेश, संसद के समक्ष प्रस्तुत होने वाली सामग्री एवं रिपोर्ट आदि के अनुवाद की जवाबदारी संबंधित मंत्रालयों/विभागों पर डालीगई, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अनुवादक को आदि के पद सृजित किए गए तथा हिंदी अनुभागों की स्थापना की गई। इन्हीं व्यवस्थाओं के तहत भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों, विभागों, संबंध एवं अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों बैंको, बीमा कंपनियों, आदि बड़े-बड़े कार्यायलयों में अनुवाद कार्य संपन्न हो रहा है।

सरकारी अनुवाद में भाषा की एकरूपता, सुगमता, पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग आदि कुछ ऐसी बातें हैं जिनमे अनुवादक निरंतर अभ्यास एवं प्रशिक्षण से प्रवणता प्राप्त कर लेता है। सरकारी स्तर पर सेवाकालीन अनुवाद प्रशिक्षण की व्यवस्था केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहले से ही की गई है तथा विभिन्न विश्वविद्यालय में अनुवाद के स्नातकोत्तर एवं पोस्ट एम.ए. डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के द्वारा भी प्रशिक्षित एवं कुशल अनुवादक तैयार किया जा रहे हैं।

वर्तमान युग की क्रांति के पीछे विज्ञान का संम्बल है तथा विज्ञान के अनेकानेक अविष्कारों ने दूरियां कम कर दी है। रही सही दूरी अनुवाद ने समाप्त कर दी है। अनुवाद के माध्यम से समृद्ध विश्व भाषाओं के स्वत: खुल गए हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश की एक सूत्रता अनुवाद में ही निहित है।

कोई भी अनुवादक जब अनुवाद करने बैठता है तो उसके द्वारा स्रोत भाषा -सामग्री के पठन से लेकर लक्ष्य भाषा में अनुवाद तैयार हो जाने तक के कार्य अर्थात अनुवादक द्वारा 'अनुवाद कार्य आरंभ'से लेकर 'अनुवाद कार्य संपन्न'-इन दो बिंदुओं के बीच की समस्त प्रक्रिया अनुवाद प्रक्रिया कहलाती है। अनुवाद प्रक्रिया में अनुवाद की वे सब बातें या प्रक्रियाए समाहित होती हैं जिनसे होकर एक अनुवादक अपने अनुवाद कार्य के दौरान गुजरता है या जिन्हें साधना स्वरूप इस्तेमाल करके अनुवाद करता है। अनुवाद की प्रक्रिया में जिन-जिन पहलुओं को समाहित किया है, वे अनुवादक द्वारा अनुवाद प्रक्रिया के दौरान गुजरने के साक्षात चरण है। अनुवाद की प्रक्रिया में एक अनुभवी अनुवादक अनुवाद करते समय मुख्य रूप से जिन सोपनो को महसूस करता है उन्हें यदि शाब्दिक अभिव्यक्ति दी जाए तो हम कर सकते हैं कि अनुवादक स्रोत भाषा से अनुवाद करते समय सर्वप्रथम पाठक की भूमिका निभाता है और स्रोत भाषा सामग्री का अर्थ ग्रहण करता है। अनुवादक द्वारा स्रोत भाषा सामग्री के पठन और उसके अर्थ ग्रहण के उपरांत वह द्विभाषिक की भूमिका निभाते हुए अर्थातरण करता है,

अतः द्विभाषिक की भूमिका और अर्थांतरण को अनुवाद प्रक्रिया का दूसरा सोपान कहा जा सकता है। अर्थांतरण के पश्चात अनुवादक स्रोत भाषा-सामग्री के स्थान पर लक्ष्य-भाषा की समतुल्य सामग्री में अनुवाद करता है तथा अर्थ संप्रेषण करता है। अतः अनुवाद प्रक्रिया के तीसरी सोपान को रचयिता की भूमिका और अर्थ संप्रेषण कहा जा सकता है। अनुवाद प्रक्रिया का अंतिम चरण समतुल्यता है। अनुवादक तीसरे सोपान से गुजरने के उपरांत स्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा में किए गए अनुवाद के समतुल्य शब्दों, पदों, पदबंधो, उपवाक्यो आदि सभी पहलुओं को दृष्टि में रखकर स्रोत भाषा सामग्री के स्थान पर लक्ष्य भाषा सामग्री की समतुल्यता करता है। तथा त्रुटि पूर्ण स्थलों का वह इस सोपान में पता लगता है।

विविध भाषा परिवारों की भाषाओं को बोलने वालों में परस्पर सद्भाव बनाए रखने में अनुवाद का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज भी अनुवाद की एक सामाजिक आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में अनुवाद का विशेष महत्व रहा है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं में किया जा रहे कार्यों का परिचय मिलता है।

अनुवाद एक विशिष्ट भाषा व्यवहार है। विशिष्ट होने के कारण अनुवाद सरल ना होकर एक जटिल कार्य है। अनुवाद एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतरण करता है। अर्थात एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में समान रूप से अभिव्यक्त कर पाना बहुत सरल कार्य नहीं होता। अनुवाद कार्य जटिल होने के कारण अनुवाद की इस जटिलता में प्रक्रियागत अनेक विचारणीय परिप्रेक्ष्य है अनुवाद करने वाला अनुवादक, अनुवाद क्यों किया जाता है, अनुवादक अनुवाद में किन साधनों का उपयोग करता है, अनुवाद कार्य निष्पादन में अनुवादक किन युक्तियो का आश्रय लेता है, अनुवाद कार्य में कैसी-कैसी त्रुटियां हो जाती है ऐसे तथ्य जिनकी जानकारी होने से अनुवाद कार्य में सफलता मिलती है तथा एक सूत्रता जारी रहती है।

आज अनुवाद ने प्रत्येक क्षेत्र में अपने पैर पसार लिए हैं तथा भाषागत दूरी कम करने में या समाप्त करने में अनुवाद अपनी भूमिका निभा रहा है। आज वैश्विक उन्नति के शिखर पर अनुवाद के कारण ही भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों को एक मंच पर स्थापित करके नापे जा रहे हैं। विश्व में तो क्या बल्कि ब्रह्मांड में कहीं भी कुछ भी घटित घटना अनुवाद के यान पर सवार होकर विश्व की सभी भाषाओं में तत्काल पहुंच जाती है। विज्ञान के आधुनिक आविष्कारों एवं जनसंचार माध्यमों ने इस गति को और अधिक त्वरित बनाया है। आज अनुवाद बहु भाषा भाषी समाज में अपरिहार्य अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। अतः अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य महाविद्यालय विश्वविद्यालय स्तर पर संपूर्ण रूप से किया जाने लगा है।

वर्तमान समय में मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य होता आया है। मनुष्य के मन में उठे विचारों की भाषा में प्रस्तुति एक तरह से अनुवाद ही है। एक अनुवादक जब अनुवाद कार्य करने बैठता है तो उसे अनुवाद करते समय किसी खास प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। वह अनुवाद आरंभ करने से अनुवाद पूर्ण करने के बीच जिन-जिन सोपनो से गुजरता है, वे सभी सोपनो अनुवाद प्रक्रिया के ही सोपान तो हैं। अनुवाद करते समय महत्वपूर्ण बात यह है कि अनुवादक अपने अनुवाद में मूल की आत्मा को

सुरक्षित रखें। वह अपने हिसाब से जोड़-तोड़ कर सकता है, काट पीट भी कर सकता है, बड़े-बड़े वाक्य को छोटे-छोटे कई वाक्य बना सकते हैं तथा छोटे-छोटे वाक्यों के लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार बड़े-बड़े वाक्य भी बना सकता है। ऐसा करने में अनुवादक को बस एक ही बात ध्यान में रखनी होती है कि आत्मा सुरक्षित बनी रहे, मूल की प्राणवान संजीव रचना लक्ष्य भाषा में जाकर निष्प्राण निर्जीव रचना न बन जाए। अतः अनुवादक को प्रक्रिया प्रवेश करने का जादू आना चाहिए तथा इसके लिए उसे पर पूर्व प्रवेश करने की चेष्टा करनी चाहिए तथा मूल लेखक के साथ मानसिक तादात्म्य बिठाने की कोशिश करनी चाहिए। मूल रचना तथा लेखन की मानसिकता के साथ जितना अधिक तादात्म्य अनुवादक स्थापित कर पाएगा इसका अनुवाद उतना ही अधिक मूल्य के प्रति निष्ठावान बन पाएगा, साथ ही, वह अनूदित रचना लक्ष्य भाषा में मूल की वैचारिकता को उतनी ही अधिक स्पष्ट कर पाएगी।

जिस गति से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हो रही है इस गति से अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती गई है और अनुवादक को इस प्रगति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की जरूरत है। वैसे तो अनुवादक की कोई सर्वसम्मत परिभाषा दे देना संभव नहीं है फिर भी विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है। हमारे विचार में भाव, रूप और शैली की दृष्टि स्त्रोत भाषा के संपूर्ण तथ्य को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करना ही अनुवाद कहलाता है। अनुवाद करने के लिए अनुवादक को संबंधित भाषाओं का ज्ञान होना सबसे पहले अनिवार्य है। इसके बिना अनुवाद संभव नहीं है। इस शब्द में कहा जा सकता है कि अनूदित रचना में वैसी ही सहजता होनी चाहिए जैसी हम मौलिक रचना में देखते हैं। दूसरे शब्दों में, दोनों को पढ़कर यह नहीं मालूम होना चाहिए कि कौन सी मूल रचना है और कौन सी अनूदित। अनुवाद करते समय अनुवादक को दोहरी भूमिका का निर्वाह करना होता है। अर्थात पहले तो स्रोत भाषा का पाठक होता है और जब वह मूल पाठ का अनुवाद लक्ष्य भाषा में करता है तब वह लेखक की भूमिका में आ जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी भी रचना के अनुवाद में अनुवादक की भूमिका मौलिक लेखक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक की पृष्ठभूमि विज्ञान की होनी चाहिए तभी श्रेष्ठ अनुवाद किया जा सकता है।। इसके लिए मात्र स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा जानना ही पर्याप्त नहीं है। अनुवादक को विषय का ज्ञान एवं संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। वैज्ञानिक साहित्य की भाषा सुनिश्चित और स्पष्ट होती है। पारिभाषिक शब्द से एक ही अर्थ प्रगट होता है, दूसरे या तीसरे अर्थ की इसमें कोई गुंजाइश नहीं होती।

वैज्ञानिक अनुवाद में सार अनुवाद या अनुकूलन के लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि इससे तथ्यों की प्रमाणिकता सुरक्षित रखना कठिन हो जाता है परंतु जो वैज्ञानिक रचनाएं सामान्य पाठकों के लिए हों या जिसका उद्देश्य जनसाधारण को विज्ञान संबंधी जानकारी देना हो उनमें थोड़ी बहुत स्वतंत्रता ली जा सकती है जितनी उसे विषय को बोधगम्य बनाने या मूल तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक हो।

वर्तमान समय में अनुवाद ने जहां एक और समाज में अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया है एवं आज लगभग हर विषय क्षेत्र के मोर्चे पर वह तैनात है, वही इस प्रकार के आक्षेप पीड़ा दायक तो है ही, साथ ही

चिंता जनक भी है। यह सही है कि किसी भी धारणा के बनने की प्रक्रिया काफी मध्य होती है और यह धारणा व्यवहार की कसौटी से उभर कर आती है। वह धारणा, पक्ष में भी हो सकती है और विपक्ष में भी। इसी प्रकार सटीक भी हो सकती है और पूर्वाग्रह वाली भी हो सकती है। वह धारणा एकांगी भी हो सकती है और अनुभवहीनता अथवा ना समझी का परिणाम भी।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि भिन्न भाषा भाषियों से संपर्क के लिए अनुवाद की सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकता सिद्ध है। अनुवाद,आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इस कारण अनुवाद का अधिकाधिक प्रसार नितांत अनिवार्य है। यह कार्य तलवार की धार पर चलने के समान कठिन है। भाषा में व्यक्त भावो, विचारों, एवं अनुभवों के आदान-प्रदान के इस माध्यम-सूत्र को प्रस्तुत करने वाले इस विषय क्षेत्र को वस्तुतः विश्व भाषा के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है। अनुवाद का विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त होने से इसका कोई विरोध नहीं होगा। कारण मानव सभ्यता के विकास में बाधा पहुंचाने वाले मूल कारण 'भाषा भिन्नता' की समस्या नहीं रहेगी। और यह मानव का सर्वाधिक हित साधन साधक सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची:

1. अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्य: डो.रामगोपाल सिंह जादौन पृष्ठ 9
2. अनुवाद की परंपरा: डो.रामगोपाल सिंह जादौन पृष्ठ-23
3. अनुवाद निरूपण:डो.भारती गोरे
4. अनुवाद भारती, त्रिमासिक पत्रिका, अखिल भारतीय अनुवाद परिषद अहमदाबाद
5. अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग, डो.जी. गोपीनाथन
6. 'अनुवाद पत्रिका'. भारतीय अनुवाद परिषद' दिल्ली।
7. जनसंचार माध्यम और अनुवाद: डॉ.रामगोपाल सिंह. पृष्ठ 45